ओरण-देवबणी री बात

कृपाविस का सामुदायिक जंगल देवबणी–ओरण संरक्षण अभियान

अंक 35 सितम्बर 2025

ओरण: एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म

''कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान'' (कृपाविस) द्वारा ओरण/देवबणियों पर एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म का फिल्मांकन करवाया गया है। फिल्म में दर्शाया गया है कि 'कैसे राजस्थान की तपती रेत और बंजर धरती के बीच, कुछ हरे–भरे स्थल ऐसे भी हैं जो सदियों से जीवन और आस्था को संजोए हुए हैं। ये ओरण– समुदायों द्वारा संरक्षित पवित्र वन क्षेत्र हैं, जहाँ प्रकृति और श्रद्धा का अद्‌भुत मेल देखने को मिलता है। ये ओरण केवल जंगल नहीं हैं, बल्कि ये आस्था के प्रतीक, संस्कृति और पारिस्थितिकी के रक्षक भी हैं।' यह दर्शाते हुए कि ये परिदृश्य औपचारिक शासन व्यवस्था के बिना ही, केवल आस्था और परंपरा के आधार पर कैसे फलते–फूलते हैं। ओरण प्राकृतिक जल स्रोत, जैव विविधता के केंद्र, जलवायु संतुलनकर्ता और सामुदायिक आजीविका के साधन के रूप में कार्य करते हैं।

कृपाविस ने इस डॉक्यूमेंट्री फिल्म में ओरणों के विभिन्न महत्वपूर्ण पहलुओं जैसे– ओरण/देवबणियों का परिचय, उत्पत्ति, धार्मिक, सांस्कृतिक व पारिस्थितिकी महत्व, खतरें और चुनौतियाँ, ऐतिहासिकता, वर्तमान स्थिति, परम्परागत प्रबंधन व्यवस्था, संरक्षण में लगे स्थानीय कार्यकर्ताओं, युवा नेताओं, ओरण प्रहरियों और महिलाओं के साक्षात्कार, कृपाविस द्वारा किए गए जलस्रोतों के नए निर्माण व पुनरोत्थान, घासों के बीजारोपण, प्रशिक्षण /कार्यशालाओं के सत्रों की झलकियाँ, कृपाविस के निरन्तर प्रयास से ओरण संरक्षण के प्रति सामुदायिक प्रयास व एकजुटता और पारंपरिक ज्ञान साझा करने के दृश्य, निष्कर्ष और ओरण संरक्षण कार्य की दिशा में समुदाय का आहवान आदि प्रमुख विषयों को सम्मलित किया गया है।

डॉक्यूमेंट्री फिल्म निर्माण का मुख्य उद्‌देश्य स्थानीय जैव विविधता, ओरण/देवबणियों में जल संरक्षण अभियान, ओरणों का दस्तावेजीकरण, समुदायों को ओरणों के संरक्षण व विकास के प्रति प्रशिक्षित/जागरूक व प्रेरित करना, ओरणों से जुड़े समुदायों की आजीविका व जैव विविधता की दृष्टि से इनके संरक्षण की प्रासांगिकता को उभारने के तहत किया गया। चूंकि ओरण जैव–विविधता प्रबन्धन की एक जीवंत परम्परा है। इस फिल्म में ओरणों के संरक्षण व संवर्धन में कृपाविस का अनुभव एवं कार्यनीति को दिखाने का प्रयास किया गया है। फिल्म में विस्तार से समझाया गया है कि किस तरह से औरणों से जुड़े समुदायों के साथ मिलकर ओरणों के सुधार और विकास में, लोगों के पारम्परिक ज्ञान, विज्ञान और सूझ–बूझ में कृपाविस ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। फिल्म की अवधि लगभग 15 मिनट की है। इस फिल्म के लिए सहयोग ''रोहिणी निलेकणी फिलांथ्रोपीज फॉउण्डेशन'' के द्वारा किया गया है। ओरण जल संरक्षण, पशु चारे और जैव–विविधता के लिए अनमोल संसाधन हैं। ओरण में पाए जाने वाले पेड़–पौधे इस क्षेत्र की जैव–विविधता को बनाए रखते हैं। जैसे– खेजड़ी, बेर, ढोक, कैर तथा अनेक दुर्लभ जीव जैसे– गोडावण, लोका, चिंकारा, मोर और सैकड़ों पक्षी साथ ही तिलोर जैस प्रवासी पक्षी। ओरण जल को संजोते हैं, मृदा को बचाते हैं, और स्थानीय जलवायु को संतुलित करते हैं। इस चलचित्र के माध्यम से वर्तमान में ओरणों के अस्तित्व पर मंडरा रहे गंभीर खतरों को भी सामने लाना है जैसे– कृषि और आवास के लिए भूमि अतिक्रमण आदि।

कृपाविस संस्थापक श्री अमन सिंह के द्वारा सुप्रीम कोर्ट में दायर याचिका पर ओरणों के पक्ष में आये ऐतिहासिक फैसले ने ओरणों की कानूनी मान्यता और सुरक्षा की तत्काल आवश्यकता पर जोर दिया है। यह फैसला ओरणों के अतिक्रमण जैसे खतरों से निपटने व ओरणों को सुरक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा। ओरणों के संरक्षण में स्थानीय समुदायों की प्रतिबद्धता और दृढ़ता का भी एक बड़ा महत्व है, इसका भी इस फैसले में ध्यान रखा गया है। यह फिल्म ओरण/देवबणियों संरक्षण व संवर्धन हेतु नीति निर्धारकों, योजनाकारों, प्रशासन, स्वैच्छिक संस्थाओं, शिक्षकों व विद्यार्थियों, राजनेताओं तथा ओरण समुदायों के बीच जागरूकता बढ़ाने में सार्थक होगी, ऐसा विश्वास है।

KRAPAVIS

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस)
कृपाविस ओरण प्रशिक्षण केन्द्र, पुराना भूरासिद्ध
काला कुँआ, अलवर-301001 (राज.)
ई-मेल:krapavis_oran@rediffmail.com
सम्पादन : अमन सिंह व प्रतिभा सिसोदिया

ओरण–देवबणी पुनरोत्थान कार्यक्रम में परम्परागत पारिस्थितिकीय ज्ञान की भूमिका

ओरण–देवबणी, प्राचीन और सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण परिदृश्यों के रूप में माने जाते हैं, जिन्हें अरावली पर्वतमाला और थार मरुस्थल क्षेत्र में उनकी गहन आध्यात्मिक महत्व के कारण पीढ़ियों से संरक्षित किया जाता है, सदियों से ये पवित्र स्थल वन्यजीवों के लिए महत्वपूर्ण आश्रय स्थल रहे हैं और साथ ही स्थानीय समुदायों, विशेषकर पशुपालन पर आधारित आजीविका वाले लोगों के जीवन निर्वाह में सहायक रहे हैं। ये पशुओं के लिए चराई हेतु महत्वपूर्ण चराई क्षेत्र, जल के स्रोत प्रदान करते हैं तथा लोगों के सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन के केंद्र रहे हैं। किन्तु ये सामुदायिक रूप से संरक्षित परिदृश्य अब गंभीर संकटों का सामना कर रहे हैं और इनके पुनर्वास के लिए तत्काल उपायों की आवश्यकता है।

अत्यधिक चराई के कारण बहुवर्षीय चारा घास प्रजातियाँ खत्म हो रही हैं, जबकि बकरियों और ऊँटों द्वारा तीव्र पल्लव चराई (ब्राउजिंग) से काष्ठीय बहुवर्षीय वनस्पतियाँ–विशेषकर झाड़ियाँ सबसे अधिक प्रभावित हुई हैं। ओरणों में स्थित जल संरचनाएँ, जो कभी मनुष्यों और पशुओं दोनों के लिए जीवनरेखा थे, अब गिरावट के स्पष्ट संकेत दे रहे हैं और इनके पुनरोत्थान की आवश्यकता है। ओरण–देवबणियों के पारिस्थितिकीय, सांस्कृतिक और आजीविका संबंधी महत्व को देखते हुए, इनके पुनर्वास और सतत प्रबंधन को प्राथमिकता देना अत्यंत आवश्यक है।

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस) पिछले तीन दशकों से अरावली और थार क्षेत्रों में ओरण–देवबणियों के अध्ययन, संरक्षण और पुनरोत्थान के कार्यों में संलग्न है। इस अवधि के दौरान संस्था ने इन पवित्र परिदृश्यों के आस–पास रहने वाले समुदायों विशेषकर चरवाहों और पशुपालकों के साथ बैठकों, कार्यशालाओं, क्षमता विकास कार्यक्रमों तथा विभिन्न अन्य पहलों के माध्यम से निकटता से कार्य किया है। हमारा अनुभव दर्शाता है कि स्थानीय समुदाय, विशेष रूप से चरवाहे और पशुपालक ओरण–देवबणियों के गहन पारंपरिक ज्ञान और समझ के धनी हैं। सदियों से इन परिदृश्यों के साथ रहने और उन पर निर्भर रहते हुए, उनके पास बाहरी लोगों की तुलना में इनकी पारिस्थितिकीय स्थितियों की कहीं अधिक गहन समझ है। इसलिए किसी भी पुनर्वास उपायों को प्रारम्भ करने से पूर्व, इन समुदायों के पारंपरिक पारिस्थितिकीय ज्ञान का दस्तावेजीकरण और समावेशन अत्यंत आवश्यक है। यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठाता है, जिस पर आगे विचार करना आवश्यक है– ओरणों में निहित पारंपरिक पारिस्थितिकीय ज्ञान आधुनिक पारिस्थितिकीय पुनरोत्थान प्रयासों, विशेषकर क्षरित परिदृश्यों और संकटग्रस्त पारिस्थितिक तंत्रो को किस प्रकार मार्गदर्शन और सुदृढ़ कर सकता है?

क्षरित जल संरचनाओं का पुनरोत्थान कार्य

मान लीजिए हमें ओरण–देवबणी के अंतर्गत क्षरित जल संरचनाओं जैसे– जोहड़/तालाब, नाडी, कुंड आदि पर पुनर्वास कार्य प्रारंभ करना है। ऐसे मामलों में सबसे पहले आवश्यक है कि आगोर (जलग्रहण क्षेत्र), ढलान, जल–धारण क्षमता, मृदा की विशेषताएँ तथा क्षरण की सीमा जैसे महत्वपूर्ण पारिस्थितिकीय और संरचनात्मक मापदंडों का परीक्षण किया जाए। यद्यपि वैज्ञानिक आकलन उपयोगी जानकारियाँ प्रदान करता है, किन्तु स्थानीय समुदायों की भूमिका अपरिहार्य हो जाती है।

समुदाय के सदस्य, विशेषकर बुजुर्ग और चरवाहे अक्सर इन जलस्रोतों का गहन एवं पीढ़ी दर पीढ़ी संचित ज्ञान रखते हैं। वे इनके आगोर, उसकी सीमाएँ, ढलान की दिशा, मौसमी वर्षा जल प्रवाह के पैटर्न तथा जलस्रोत के ऐतिहासिक कार्यप्रणालियों का सटीक वर्णन कर सकते हैं। इनमें से कुछ लोग पिछले वर्षा की घटनाओं, जल भंडारण क्षमताओं और इस संरचनाओं के रखरखाव एवं गाद (सिल्ट) हटाने में प्रयुक्त पारंपरिक विधियों की भी जानकारी दे सकते हैं। ऐसा पारंपरिक पारिस्थितिकीय ज्ञान संदर्भ–विशिष्ट और प्रभावी पुनर्वास उपायों की रूपरेखा तैयार करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण संकेत प्रदान करता है।

उदाहरणस्वरूप, पूर्ववर्ती जल प्रवाह मार्गों की समझ प्राकृतिक नालों को पुनर्जीवित करने में सहायक हो सकती है, आगोर की सीमाओं का ज्ञान अतिक्रमण से संरक्षण का मार्गदर्शन कर सकता है, और पारंपरिक प्रथाओं के स्मरण ऐसे पुनरोत्थान उपायों को सूचित कर सकते है जो कम लागत वाले और टिकाऊ दोनो हों। इसके अलावा जैसलमेर जिले में कुछ जलस्रोतों के पास आज भी

पृष्ठ संख्या 2 का शेष.....

गोवर्धन (शिलालेख) मिलते हैं, जो उनकी ऐतिहासिक महत्ता को दर्शाते हैं। इसके अतिरिक्त इन जलस्रोतों से जुड़ी सामाजिक–सांस्कृतिक कड़ियाँ उनके धरोहर महत्व को रेखांकित करती हैं, तथा यह स्पष्ट करती हैं कि ओरण केवल पारिस्थितिक संपदा ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान और परंपरा के जीवित प्रतीक भी हैं।

अतः आधुनिक जल–वैज्ञानिक आकलनों को समुदाय को जीवन–अनुभव और ऐतिहासिक स्मृति के साथ समन्वित करना यह सुनिश्चित करता है कि ओरणों में जलस्रोतों का पुनर्वास पारिस्थितिकीय दृष्टि से सुदृढ़, सांस्कृतिक रूप से निहित और सामाजिक रूप से स्वीकार्य हो। यह सहभागी दृष्टिकोण न केवल क्षरित जलस्रोतों को पुनर्जीवित करता है, बल्कि समुदाय की संरक्षक भूमिका को भी मजबूत करता है, जो उनकी दीर्घकालिक स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण है।

वनस्पति एवं वन्यजीव पुनर्वास कार्य

ओरण–देवबणी के अंतर्गत वनस्पति घटक के पुनर्वास कार्य के दौरान स्थानीय समुदायों का ज्ञान अमूल्य दृष्टिकोण प्रदान करता है। उनके पास देशज पौध प्रजातियों की गहन समझ होती है, जैसेकि उनकी अतीत एवं वर्तमान स्थिति, पुनर्जनन के पैटर्न, सतत् चराई प्रथाएँ, तथा विविध लघु वन उत्पादों (नॉन–टिम्बर फॉरेस्ट प्रोडक्ट्स) के स्रोत के रूप में उनका महत्व। विशेष रूप से चरवाहे अक्सर किसी विशिष्ट वृक्ष प्रजाति की अनुमानित आयु की भी जानकारी रखते हैं और उसकी पारिस्थितिकीय, सांस्कृतिक एवं आर्थिक महत्ता को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकते हैं। वे ओरणों में घास, झाड़ियों और वृक्षों की मौसमी प्राथमिकता और चारे की गुणवत्ता के व्यवहारिक ज्ञान के भी धनी होते हैं।

इसी प्रकार, यदि पुनर्वास का केंद्र वन्यजीवों पर हो, तो स्थानीय ज्ञान फिर से एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समुदाय के सदस्य स्थानीय वन्यजीव प्रजातियों की उपस्थिति और व्यवहार की पहचान कर सकते हैं, साथ ही उनके आश्रय स्थलों– जैसे वृक्षों के तनों में कोटर (कैवटिज) के रूप में, झाड़ियों के नीचे बिल या विशिष्ट आवासों में घोंसले की जानकारी भी दे सकते हैं। वे विभिन्न मौसमों में वन्यजीवों द्वारा पसंद किए जाने वाले चारा प्रजातियों के साथ–साथ ओरण में पक्षियों द्वारा अधिक रूचिकर घास और शाकीय पौधों के बीजों की जानकारी भी प्रदान कर सकते हैं।

विवेचना एवं निष्कर्ष

ओरण–देवबणियों में निहित पारंपरिक पारिस्थितिकीय ज्ञान आधुनिक पारिस्थितिकीय पुनरोत्थान दृष्टिकोण को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, विशेषकर जब यह क्षरित परिदृश्य और संकटग्रस्त पारिस्थितिक तंत्रो में लागू किया जाता है। इन पवित्र परिदृश्यों से जुड़ी परंपरागत प्रथाओं का अध्ययन और समझकर हम ऐसे पुनरोत्थान रणनीतियाँ खोज सकते हैं, जो स्थानीय पारिस्थितिकीय और सांस्कृतिक संदर्भों के अनुकूल हों। हम यह भी जानते हैं कि ओरण संकटग्रस्त और स्थानीय प्रजातियों के लिए महत्वपूर्ण शरणस्थल हैं साथ ही, जैव विविधता के जीवित भंडार के रूप में कार्य करते हैं। उदाहरण के लिए, गूगल (*कोंमिफेरा विटाई*), जो थार और अरावली दोनों क्षेत्रों की अत्यंत मूल्यवान लेकिन संकटग्रस्त औषधीय पौधा है, के लिए ओरण–देवबणियों में तात्कालिक स्वस्थाने संरक्षण उपायों की आवश्यकता है। इसी प्रकार, गोडावन (ग्रेट इंडियन बस्टर्ड), जो थार मरूस्थल में गंभीर रूप से संकटग्रस्त हैं, ओरणों के स्वास्थ्य से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है।

स्थानीय चरवाहे, पशुपालक और ग्रामीण, जो गोडावन के साथ इस परिदृश्य को साझा करते हैं, इसके पारिस्थितिकीय प्राथमिकताओं, जैसे पसंदीदा वनस्पति, मौसमी आहार, और प्रजनन स्थलों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान कर सकते हैं, जो अक्सर पारंपरिक वैज्ञानिक सर्वेक्षणों में अनदेखी रह जाती है। ऐसे गहरे रचे–बसे पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक पारिस्थितिक विज्ञान के साथ एकीकृत करने से ऐसे पुनर्वास प्रयासों की रूपरेखा तैयार की जा सकती है, जो पारिस्थितिकीय रूप से प्रभावी और सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त दोनों हों। यह समग्र दृष्टिकोण न केवल पारिस्थितिक संतुलन और जैव विविधता संरक्षण को बढ़ाता है, बल्कि समुदाय की संरक्षक भूमिका को भी सुदृढ़ करता है, साथ ही ओरण भूमि के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व का भी सम्मान करता है। अंततः पारंपरिक पारिस्थितिकीय ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के संयोजन से पवित्र स्थलों को पुनर्जीवित करने के ऐसे मार्ग बनते हैं, जो अधिक लचीले, समावेशी और टिकाऊ हों और यह सुनिश्चित करते हैं कि पारिस्थितिक तंत्र उन समुदायों के साथ पनपते रहें जिन्होंने सदियों से उनका संरक्षण किया है।

संक्षेप में, पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान का यह समृद्ध भंडार एक व्यावहारिक क्षेत्र मार्गदर्शिका के रूप में कार्य करता है, जो वैज्ञानिक आकलनों का पूरक बनता है और यह सुनिश्चित करता है कि पुनर्वास उपाय, चाहे जल संरचनाओं, वनस्पति या वन्यजीवों के लिए हो, वह पारिस्थितिकीय रूप से सुदृढ़, सांस्कृतिक रूप से निहित, और दीर्घकालिक सफलता की अधिक संभावना वाले हो।

– अमन सिंह एवं जे. पी. सिंह

आईनाथ माता ओरण, आसकंद्रा, जैसलमेर

आसकंद्रा गाँव की ओरण को आईनाथ माता की ओरण के नाम से जाना जाता है, जो जैसलमेर के पोकरण तहसील में स्थित है। इस ओरण का क्षेत्रफल लगभग 14000 बीघा तथा गोचर क्षेत्र लगभग 5400 बीघा है। ओरण के इतिहास की बात करें तो यह लगभग 700 वर्ष पुराना बताया जाता है इसकी स्थलाकृति समतल, मिट्टी का प्रकार बलुई तथा ओरण का स्वास्थ्य अच्छा है। ओरण का ऐतिहासिक महत्व यह है कि यहाँ के समुदाय के लोग अपनी रसोई में दरवाजे नहीं लगाते हैं उनका यह भी मानना है कि कुत्ते व बिल्ली रसोई में मान्यता के अनुसार नहीं घुसते। ओरण क्षेत्र में दस तालाब हैं जिनमें लगभग दो से चार महीने ही पानी रहता है। यहाँ का भू–जल स्तर लगभग 400 फीट तक नीचे हैं, पेयजल स्रोत के रूप में पशुओं के पानी पीने के लिए समुदाय के द्वारा चार खेली बनवायी गई हैं।

इस ओरण के आस–पास के गाँवों के समुदायों में दरोगा, डोली, राजपूत, मेघवाल, भील, जोगी, नाई, लोहार आदि जातियाँ निवास करती हैं। कृषि एवं पशुपालन यहाँ के समुदाय की मुख्य आजीविका स्रोतों में सम्मिलित है। ओरण का एक सामुदायिक नियम है कि पूर्वजों द्वारा छोड़ी गई ओरण के नाम पर भूमि क्षेत्र में कोई भी हरी लकड़ी नहीं काटता यदि कोई ऐसा करता है तो देवी द्वारा उसको पर्चा दिया जाता है जिसमें या तो वह पागल व दृष्टिहीन हो जाता है या किसी रोग से ग्रस्त हो जाता है। ओरण भूमि का स्वामित्व किसी समिति के हाथ में न होकर सार्वजनिक है, यहाँ पर कोई प्रबंधन समिति नहीं है एक अलिखित समिति बनी हुई है तथा ग्रामवासी आवश्यकता पड़ने पर पंचायत के सहयोग से अपनी भूमिका निभाते हैं।

ओरण में गाय, बकरी, भेड़, ऊँट, घोड़ा, गधा आदि चराई के लिए निर्भर हैं तथा यहाँ पर चराई पूरे वर्ष होती है, अन्य क्षेत्र के पशुओं को भी यहाँ चराई के लिए लाया जाता है जो 3 से 6 महीने तक चराई के लिए आते हैं। इस तरह देखा जाए तो यहाँ पर चराई अत्यधिक हो रही है। अच्छी पूरे वर्ष होने पर 1 वर्ष अथवा 6 से 7 महीने घास मौजूद रहती है। पूरे वर्ष भर चराई से छोटे पौधे नहीं पनप पाते, क्योंकि भेड़ व बकरी छोटे पौधों को खा जाती है, यह एक बड़ी समस्या है। ओरण में मुख्यतः कांटेदार वनस्पति मौजूद हैं, मुख्यतः पेड़ जिसमें बेर, रोहिडा, खेजड़ी, कैर, जाल, देशी बबूल आदि के पेड़ हैं जिसमें मुख्य रूप से बेर बहुतायत मात्रा में हैं। साथ ही झाड़ियों में आक, बावली, खीप आदि पाई जाती हैं तथा आक ज्यादा मात्रा में फैलता जा रहा है। पेड़ों में रोहिडा और खेजड़ी के पेड़ कम हो रहे हैं। यहाँ से लघुवन उपज के रूप में भी समुदाय फल एकत्रित करते हैं तथा ज्यादातर पीलू/जाल के फल पशु–पक्षी का खा जाते हैं।

औषधीय पौधों में छपरी, चामकस, सोनामुखी आदि पौधे पाए जाते हैं जिनमें से छपरी व चामकस बहुत कम होते जा रहे हैं। महत्वपूर्ण झाड़ियों में लाणा, फोग, बुई, चग, सिणियो आदि पायी जाती हैं, यहाँ पर नई प्रजाति के रूप में विलायती बबूल धीरे–धीरे अपने पैर पसार रहा है तथा बेलों में मुख्य रूप से तुम्बा बेल पाई जाती है। ओरण में घास प्रजातियों में गठिया, भुरट, सेवण और धामण तथा अन्य शाकीय पौधों में बेकर, सनावड़ी, साटो आदि मौजूद हैं।

ओरण में पाए जाने वाले मुख्य वन्यजीवों में हिरण, नीलगाय, खरगोश, जंगली सुअर, लोमड़ी, जंगली बिल्ली, नेवली, सियार आदि पाए जाते हैं। स्थानीय पक्षियों में मोर, कबूतर, चिड़िया, तीतर, गेरी, उल्लू आदि हैं, ओरण में पहले गोडावण और तिलोर पक्षी देखें जाते थे लेकिन अब वह क्षेत्र में दिखाई नहीं देते। इस ओरण में अतिक्रमण का भी प्रभाव है जिसमें कृषि भूमि, मकान के रूप में अतिक्रमण तथा यहाँ के पत्थर निकाल कर बेचे जाते हैं जो एक बड़ी समस्या है। ओरण में नवरात्र केसमय कार्यक्रम आयोजित किया जाता है तथा भाद्रपद की आश्विन में त्यौहार मनाया जाता है, जिसमें लगभग 400 से 500 समुदाय जन आते हैं, जो हर्ष के साथ त्योहार में सम्मलित होकर मनाते हैं।

–ग्रामवासी, गाँव–आसकंद्रा, जिला–जैसलमेर

हड़बूजी की ओरण, बेंगटी कला, फलोदी

हड़बूजी की ओरण फलोदी जिला व तहसील मुख्यालय से लगभग 25 कि.मी. दूरी पर बेंगटी कला गांव में स्थित है। यह ओरण 750 वर्ष पुराना है, ओरण की भौगोलिक स्थिति समतल है तथा स्वामित्त ग्राम पंचायत व श्री हड़बूजी चैरिटेबल ट्रस्ट के हाथों में है जो ओरण का रखरखाव भी करते हैं। हड़बूजी की ओरण के नाम से पवित्र भूमि लगभग 18000 बीघा से भी अधिक क्षेत्रफल में पंजीकृत है जिसमें ओरण व गोचर दोनों की भूमि सम्मलित है।

15वीं शताब्दी में महाराजा रावजोधा जी द्वारा मण्डोर (जोधपुर) की विजय पर बेंगटीकला की जागीरदारी हड़बूजी को दी। वह बेंगटी के जागीरदार नहीं बने बल्कि सेवक बनकर रहे तथा उन्होंने गायों व असहायों की सहायता की। हड़बूजी को शादी में दहेज में एक बैलगाडी मिली थी, जिसमें चारा भरकर लाते थे तथा जिस चारे को भूखी व अपंग गायों को खिलाते थे। 1721 में अजीत सिंह जी ने बेंगटीकला में हड़बूजी का एक मन्दिर भी बनवाया जिसमें वह बैलगाड़ी आज भी रखी हुई है। इस प्रकार समुदाय हड़बूजी को त्याग और आस्था का प्रतीक आज भी मानते हैं। मन्दिर के पुजारी बताते हैं कि इस बैलगाड़ी के नीचे होकर निकलने से कई असाध्य रोग भी ठीक हो जाते हैं तथा गूंगे, बहरे, सुनने व बोलने लगते हैं, ऐसा चमत्कार देखा गया है। रामायण में भी ओरणों के बारे में निम्न चौपाई कही गई हैं:

खग मृग बृंद अनंदित रहहीं।
मधुप गुंजत छबि लहहीं।।
सो बन बरनि न सक अहिराजा।
जहाँ प्रगट रघुबीर विराजा।।

ओरण में कैर, जाल, बेर, खेजड़ी, नीम व विलायती बबूल के पेड़ हैं, जिसमें कैर बहुतायत मात्रा में हैं, खेजड़ी पर संकट खड़ा है तथा कुमट के पेड़ नहीं बचे हैं। गंठिया, लोफ, बेकर, दूधेली, चाम, कांटेली आदि घासें इस ओरण में मिलती है तथा आक, मुराली, सोनामुखी जैसी झाडियाँ भी ओरण में मौजूद हैं जिसमें सोनामुखी ओरण में नये रूप में विकसित हो रहा है। जंगली पशुओं में नीलगाय, सुअर, रोजड़ा, गंडूरा, लोका, नोल्या/नेवला, सियार, गिलहरी आदि पाये जाते हैं। मोर, चमगादड़, कबूतर, तीतर, चिड़िया, कौआ, गेरी पक्षी भी यहाँ खूब चहचहाते हैं। गाँव में लगभग 60,000 पालतू पशु हैं जिसमें भेड़, बकरी, गायें, घोड़ें व ऊँट आदि हैं जो इसी ओरण पर निर्भर हैं तथा पूरे साल चराई करते हैं। अतः कुल मिलाकर ओरण में जैव विविधता ठीक है।

ओरण के आस–पास के समुदायों में भील, मुस्लिम, राजपूत, मेघवाल, सुथार, नाई, ढोली, ब्राह्मण आदि जातियों के लोग निवास करते हैं। समुदाय के लोगों का प्रमुख जीवन–यापन का जरिया कृषि एवं पशुपालन है। साथ ही समुदाय के लोगों की आजीविका का मुख्य साधन भी ओरण से जुड़ा हुआ है।

गाँव के किनारे ओरण में एक पुराना कुआँ भी है, जिसे गाँव के सभी लोग पीने का पानी के लिए उपयोग लेते थे लेकिन वर्तमान में वह जर्जर अवस्था में है। इस ओरण में 6 तालाब हैं जिसमें से एक बड़ा तालाब भी है जिसमें सालभर पानी भरा रहता है साथ ही कुछ तालाब ग्रामीणों की देख–रेख में स्वच्छ तथा अच्छी अवस्था में हैं एवं ओरण क्षेत्र के आस–पास भू–जल स्तर लगभग 600 से 700 फीट है।

सामुदायिक नियम के रूप में इस ओरण से कोई भी व्यक्ति हरी लकडी नहीं काटता है तथा लगभग सभी इस नियम का पालन करते हैं। वर्ष में एक बार भाद्रपद माह की षष्टमी को ओरण में मेला भी लगता है जिसमे हर राज्य के श्रद्धालू हजारों की संख्या में मन्नत मांगने व दर्शन करने आते हैं।

–रामावतार शर्मा, कृपाविस टीम, फलोदी

ओरणों के संरक्षण में उत्कृष्ट योगदान हेतु कृपाविस संस्थापक श्री अमन सिंह ''मारवाड़ रत्न 2025'' से सम्मानित

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस) के संस्थापक श्री अमन सिंह को ''मारवाड़ रत्न पुरस्कार 2025'' से मारवाड़ रत्न पुरस्कारों की श्रेणी में ''एच एच महाराजा उम्मेद सिंह '' पुरस्कार से 8 अगस्त 2025 को जोधपुर में महाराजा श्री गज सिंह द्वितीय के हाँथों सम्मानित किया गया। यह मारवाड़ रत्न पुरस्कारों में से एक है, जो मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट द्वारा मारवाड़ की समृद्ध विरासत को सम्मानित करने के लिए दिए जाते हैं। यह पुरस्कार विशेष रूप से पर्यावरण और ओरणों के संरक्षण व संवर्धन में उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्तियों को सम्मानित करता है।

श्री अमन सिंह के गत तीन दशकों से ओरण/देवबणियों एवं पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रयास, योगदान एवं कार्यो के लिए मारवाड़ रत्न पुरस्कार से सम्मान प्रदान किया गया है।

ओरण–देवबणी संरक्षण: सुप्रीम कोर्ट के निर्णय की अनुपालना में उच्च स्तरीय सरकारी कमेटी का गठन

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस) के संस्थापक पर्यावरणविद् श्री अमन सिंह की याचिका पर 18 दिसंबर 2024 को माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय की अनुपालना में ओरण–देवबणियों के संरक्षण को सुनिश्चित करने के लिए राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश जे. आर. गोयल की अध्यक्षता में पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा एक उच्च स्तरीय कमेटी का गठन किया है, जिसको 29 अप्रैल 2025 को सुप्रीम कोर्ट ने मंजूरी दी। यह कमेटी ओरणों के संरक्षण पर सरकार के निम्न कार्यों की समीक्षा करेगी–

- राजस्थान राज्य के प्रत्येक जिले में ओरण, देव–वन, रून्ध या किसी अन्य नाम से ज्ञात पवित्र उपवनों की पहचान करना।
- पहचाने गए पवित्र उपवनों को सटीक रूप से सीमांकित करने के लिए किए गए जमीनी सर्वेक्षण और सैटेलाइट मानचित्रण।
- इन पवित्र उपवनों का ''डीम्ड फॉरेस्ट'' के रूप में वर्गीकरण।
- वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 की धारा 36 सी के तहत, जहाँ उपयुक्त हो, पवित्र उपवनों को सामुदायिक रिजर्व क्षेत्र के रूप में घोषित करना।

यह उच्च स्तरीय कमेटी बनने से ओरण–देवबणियों के संरक्षण व उनके संवर्धन के कार्य को तेजी मिलेगी।

राजस्थान में ओरण–देवबणियाँ: एक प्रशिक्षण दिग्दर्शिका

राजस्थान के शुष्क और अर्ध–शुष्क क्षेत्रों में स्थित ओरण–देवबणियाँ न केवल पारंपरिक सांस्कृतिक धरोहर हैं, बल्कि ये समुदाय–आधारित पारिस्थितिकी तंत्र भी हैं, जो स्थानीय आजीविकाओं, जैव–विविधता और जल संरक्षण का आधार हैं। समय के साथ, इन पवित्र स्थलों के महत्व को लेकर जागरूकता बढ़ी है, लेकिन इनके विभिन्न पक्षों को एकत्र कर प्रस्तुत करने का कार्य सीमित रूप में ही हुआ है। इस पुस्तक का उद्देश्य ओरणों से जुड़े प्रमुख पारिस्थितिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक पहलुओं पर प्राथमिक, व्यवस्थित और उपयोगी जानकारी प्रस्तुत करना है। यह विशेष रूप से ओरण–देवबणी समुदायों के प्रशिक्षणार्थियों, छात्रों, शोधकर्ताओं और अन्य हितधारकों के लिए तैयार की गई है, जो इन पारंपरिक स्थलों की भूमिका को समझने और संरक्षित करने के प्रयासों से जुड़े हैं। इस दिग्दर्शिका पुस्तक का लेखन कृपाविस टीम ने किया तथा प्रकाशन कृपाविस संस्थान ने फॉउन्डेशन फॉर इकोलॉजिकल सिक्योरिटी (एफ. ई. एस) के वित्तीय सहयोग से किया।

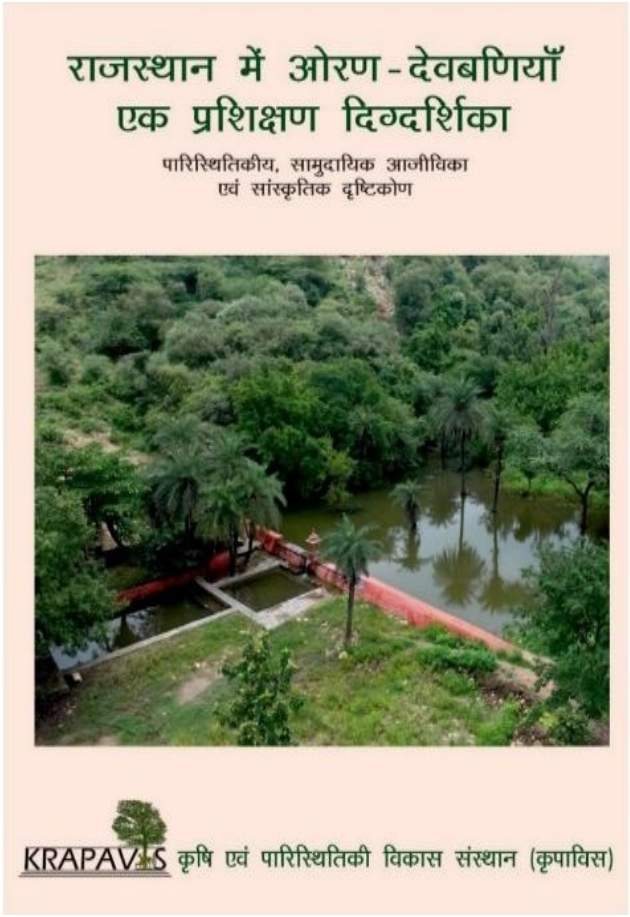

ओरण प्रहरी पुरस्कार 2026 आवेदन आमंत्रित

कृपाविस द्वारा ''ओरण प्रहरी पुरस्कार 2026'' हर वर्ष की भाँति, वर्ष 2026 के लिए सामुदायिक ओरणों के कार्यों से जुड़े हुए व समर्पित लोगों के आवेदन आमंत्रित करती है। यह पुरस्कार ओरण/देवबणियों के संरक्षण व संवर्धन में कार्यरत व्यक्तियों को दिया जाता है। इस आवेदन हेतु कृपाविस स्थानीय कार्यकर्ता से सम्पर्क कर सकते हैं।

सरिस्का क्षेत्र की महिलाओं का जैव विविधता संरक्षण और आजीविका संवर्धन पर प्रशिक्षण कार्यशालाएँ

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस) द्वारा कृपाविस प्रशिक्षण केंद्र, पुराना भूरासिद्ध, अलवर में 3 व 4 जुलाई, 2025 को सरिस्का क्षेत्र के ओरण समुदायों के महिला सम्भागियों के साथ जैव विविधता संरक्षण व आजीविका संवर्धन पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन ''रोहिणी निलेकणी फिलांथ्रोपीज फॉउण्डेशन'' के सहयोग से किया गया। जिसमें अलवर जिले के कालीखोल, बख्तपुरा, जेसाड़ा, बन्दा का बास, रामनगर, चन्देला की ढाणी, केरवावाल, पथरोड़ा, बेरा आदि विभिन्न गाँवों के देवबणी–ओरणों की लगभग 50 महिलाओं ने भाग लिया। कार्यशाला में कृपाविस संस्थापक श्री अमन सिंह ने ओरण–देवबणी क्षेत्रों के आस–पास के समुदायों के बीच जैव विविधता संरक्षण और समुदायों की आजीविका संवर्धन विषय महत्व पर प्रकाश डाला, साथ ही ओरण–देवबणी में कौन से प्राकृतिक सामूहिक संसाधन स्थित हैं व उनके उपयोग व प्रबंधन प्रक्रिया पर महत्वपूर्ण प्रशिक्षण दिया। कृपाविस की निदेशक श्रीमती प्रतिभा सिसोदिया ने स्वयं सहायता समूह महिला मंडल व सामूहिक संसाधनों के प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका पर विस्तार से जानकारी दी तथा महिलाओं को मण्डल बनाने के लिए प्रेरित किया जिससे वह सामाजिक ज्ञान व आर्थिक मजबूती से जुड़ सके।

कृपाविस के डॉ. सीताराम वर्मा ने गाय/भैंस, भेड़ एवं बकरियों की उन्नत व प्रमुख नस्लों की जानकारी एवं नस्ल सुधार कार्यक्रम, पशुधन बीमा योजना के साथ–साथ सरकार द्वारा आम लोगों के लिए संचालित विभिन्न बीमा योजनाएँ, कृत्रिम गर्भाधान रिपीट बीडिंग एवं प्रजनन सम्बन्धि रोगों, संक्रामक बीमारियों का उपचार एवं रोकथाम हेतु टीकाकरण, आवास व्यवस्था पर भी जानकारी दी। कृपाविस के श्री मनीष कश्यप ने ओरण–देवबणी जल संरक्षण अभियान व पारंपरिक जल संरचनाओं के संरक्षण व महत्वता पर महत्वपूर्ण प्रशिक्षण दिया। श्री डी. के. भारद्वाज (कृषि विशेषज्ञ) ने सतत् स्थायी कृषि का अर्थ, विशेषताएँ एवं मुख्य घटक तथा टिकाऊ खेती के तहत मृदा उत्पादकता को कैसे सुधारे विषय पर अपने विचार व अनुभव साझा किये। साथ ही खरीफ की फसलों की किस्म एवं बीमारियों के बचाव में बारे में विस्तृत चर्चा की।

अगले सत्र में पशुपालन विभाग के वरिष्ठ पशु चिकित्सक डॉ. ए. पी. मिश्रा (से.नि.) सरस डेयरी, अलवर द्वारा महिला डेयरी समिति के गठन के बारे में विस्तार से प्रशिक्षण दिया, जिससे महिलाओं को आजीविका सुदृढ़ीकरण हो सके। कार्यक्रम के अन्तिम सत्र में श्री अमन सिंह तथा कृपाविस को ओरण–देवबणियों के संरक्षण हेतु मिलने वाले पुरूस्कारों के लिए आये सभी सम्भागियों ने बधाई दी और हर्ष जताया।

इसी प्रकार से कृपाविस द्वारा 17–18 सितम्बर, 2025 को भी दो दिवसीय 'ओरणों में जल संरक्षण और समुदायों की आजीविका संवर्धन' के विषय पर कृपाविस प्रशिक्षण केंद्र, पुराना भूरासिद्ध, अलवर में डी. सी. बी. बैंक लिमिटेड के सहयोग से प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई। साथ ही प्रशिक्षण के दौरान 'ओरण–देवबणी जल संरक्षण व संवर्धन अभियान' प्रदर्शनी के द्वारा सम्भागियों को जल संरक्षण पर जागरूकता भी प्रदान की गई। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में सरिस्का के 40 महिला व पुरूष प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

– मनीष कश्यप

कृपाविस द्वारा ओरणों के संरक्षण व प्रबंधन पर रामदेवरा में जागरूकता प्रशिक्षण कार्यशाला

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस), अलवर द्वारा रामदेवरा, जैसलमेर में 4 व 5 अगस्त, 2025 को ओरण संरक्षण, प्रबंधन व संवर्धन हेतु ओरण समुदायों की दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला ''रोहिणी निलेकणी फिलांथ्रोपीज फॉउण्डेशन'' के सहयोग से आयोजित की गई। जिसमें जैसलमेर व फलोदी जिलों के विभिन्न गांवों जिसमें सोडाकोर, ढढू, भैरवा, लोहारकी, नगणी नगर, मोरिया, आसकन्द्रा, नयागां, पलीना, जावन्ध नई, मोडरडी, लुणा कला, भादरियाजी, चाचा, ओढ़ानिया, बैगटी खुर्द आदि ओरण समुदायों के लगभग 40 महिला व पुरूष प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यशाला के शुरूआत में कृपाविस संस्थापक श्री अमन सिंह ने ओरण–देवबणियों के परिचय, संरक्षण व संवर्धन, पुनर्निमाण के साथ सामाजिक, सांस्कृतिक, आजीविका व पर्यावरणीय महत्वता तथा ओरणों के हित में हुए ऐतिहासिक फैसले के साथ ओरणों के संरक्षण व समुदाय के अधिकारो को सुनिश्चित करने की भी बात रखी।

कृपाविस के सलाहकार एवं काजरी के पूर्व प्रधान वैज्ञानिक डॉ. जे. पी. सिंह ने ओरणो की जैव विविधता संरक्षण, महत्वता व समुदायों को मिलने वाली पारिस्थितिकीय सेवाओं पर जो कई सदियों से समुदाय को प्राप्त होती आ रही है आदि के बारे में विस्तार से जानकारी दी। साथ ही उन्होनें यह भी बताया कि ओरण क्षेत्र केवल समुदाय के नियमित पूर्ति व आजीविका के लिए ही आवश्यक नहीं है बल्कि यह समुदाय के साथ–साथ स्थानीय और प्रवासी पक्षियों व वन्यजीवों के लिए भी आधार हैं। साथ ही इन ओरणों में कुछ ऐसी प्रजातियों के वन्यजीव व पक्षी मौजूद हैं जो पूरी तरह से इन्हीं ओरणों पर निर्भर हैं। ओरण–देवबणियाँ पशु–पक्षियों, वन्यजीवों, घासों, पेड़–पौधों, जल संरचनाओं, वनस्पतियों, अनेक जैव विविधताओं सहित समुदाय से जुड़ी धार्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक परंपराओं का एक विशाल संग्रह है।

कृषि विज्ञान केन्द्र (के.वी.के.) बाड़मेर के डॉ. विनय कुमार ने कृषि एवं ओरणो का अंतर्सम्बंध, महत्व एवं के. वी. के. द्वारा संचालित योजनाओं के विषयों पर चर्चा की। कृपाविस के श्री मनीष कश्यप ने ओरणों में परम्परागत जल स्त्रोतों की पुनःस्थापन एवं इन जल स्त्रोंतो के नये निर्माण व पुनरोत्थान, कृपाविस के अपनायी नीति के अनुसार ओरणों के दस्तावेजीकरण प्रक्रिया, समुदायों की विशेष भागीदारी आदि पर विस्तृत जानकारी दी। साथ ही उन्होनें बताया कि कृपाविस ने ओरणों के दस्तावेजीकरण प्रक्रिया जिनमें ओरण एटलस, ओरण–देवबणी री बात, राजस्थान में ओरण–देवबणियाँ: एक प्रशिक्षण दिग्दर्शिका, वर्षा जल, मवेशी, जी. आई. एस. मैपिंग व आदि अन्य का दस्तावेजीकरण भी किया गया है। अगले सत्र में श्री अमन सिंह व डॉ. जे. पी. सिंह ने ग्राम स्तर पर ओरण संरक्षण व प्रबंधन विषय पर सभी सम्भागियों के साथ गहन चर्चा की। कृपाविस निदेशक श्रीमती प्रतिभा सिसोदिया की अध्यक्षता में विभिन्न ओरणों से आए संभागियों ने ओरण संरक्षण व संवर्धन पर अपने–अपने विचार व अनुभव साझा किये उन्होनें ओरण संरक्षण हेतु कई महत्वपूर्ण बिंदूओं पर चर्चा की। श्री अनिल कुमार ने ओरण संरक्षण व प्रबंधन के बेहतर रखरखाव में महिलाओं की भूमिका तथा महिला मंडल संगठन निर्माण प्रक्रिया पर जानकारी साझा की।

वर्तमान परिदृश्य में ओरणों पर खतरे तथा ग्रामीण आजीविका में ओरणों के महत्व पर श्री अमन सिंह एवं डॉ. जे. पी. सिंह ने सभी सामुदायिक सम्भागियों से अपने अनुभव साझा किये। इसी विषय पर ओरण संरक्षण पर समुदायों की भागीदारी पंचायत के साथ संबंध में राज्य सरकार के साथ संपर्क स्थापित करके ओरणों के पुनरोत्थान कार्यों व ओरण सर्वे फार्मेट पर कृपाविस के स्थानीय समन्वयक श्री रामावतार शर्मा ने विभिन्न ओरण प्रहरियों के साथ चर्चा की। अन्तिम सत्र में डॉ. जे. पी. सिंह ने आगामी ओरण प्रबंधन एवं क्षमता सृजन प्रशिक्षण सर्वे फॉर्म पर ओरणों के समुदायों को विस्तार से समझाते हुए, सर्वे फॉर्म की महत्वता एवं इसके माध्यम से ओरणों के संरक्षण की जानकारी संग्रहीत करने की प्रक्रिया के बारे में सम्भागियों को विस्तृत जानकारी प्रदान की।

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस), ओरण प्रशिक्षण केन्द्र, पुराना भूरासिद्ध, अलवर (राज०) द्वारा जनहित में प्रसारित।
इस अंक के लिए सहयोग फॉउन्डेशन फॉर इकोलॉजिकल सिक्योरिटी से प्राप्त ।
मुद्रक: जय बाबा प्रिन्टर्स, स्टेशन रोड़, अलवर । संपादन सहयोग: मनीष कश्यप